नईदुनिया

संपादकीय

मोदी, पुतिन, जिनपिंग : दुनिया ने देखा भारत का नया अवतार

युद्ध के बीच शांति का प्रस्तावक बन रहा भारत

शंघाई *सहयोग संगठन की बैठक के दौरान जो दृश्य दुनिया ने देखा है, वह वैश्विक कूटनीति की दिशा तय करेगा। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और ईरान के राष्ट्रपति के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुलाकातें हुई हैं।*

इन मुलाकातों का लब्बोलुआब एक ही है - दुनिया में तनाव है और सभी की नजर भारत पर है। पुतिन के साथ हुई लंबी बातचीत, जिनपिंग के साथ सीमा पर स्थिरता और व्यापार संतुलन पर चर्चा तथा ईरान के राष्ट्रपति के साथ पश्चिम एशिया में शांति पर मंथन बदलते दौर का संकेत है। ईरान के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा है कि आप युद्ध रुकवाने के लिए आगे आएं। यह भारत की विश्वसनीयता का प्रमाण है।

रूस के राष्ट्रपति के साथ मुलाकात में प्रधानमंत्री मोदी ने साफ संदेश दिया कि युद्ध में बिताया हर दिन मानवता को पीछे ले जाता है। भारत ने कहा है कि यह युद्ध का युग नहीं, संवाद और कूटनीति का युग है। दोनों नेताओं ने राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा, ऊर्जा और अंतरिक्ष में सहयोग की समीक्षा की। रूस-यूक्रेन संघर्ष, काला सागर में संघर्ष, समुद्री व्यापार और भारतीय नाविकों की सुरक्षा पर चर्चा हुई।

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात इसलिए अहम है, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में भारत-चीन संबंधों में तनाव रहा है। गलवान के बाद से भरोसा टूटा था। दोनों देश जानते हैं कि एशिया की स्थिरता के लिए साथ आना जरूरी है। सीमा पर शांति, व्यापार घाटा कम करने और वैश्विक मंचों पर सहयोग बढ़ाने पर बातचीत महत्वपूर्ण है।

ईरान के राष्ट्रपति की प्रधानमंत्री मोदी से अपील ध्यान खींचने वाली है। पश्चिम एशिया तनाव में है। ऐसे में ईरान का भारत से युद्ध रुकवाने के लिए आगे आने का आग्रह बताता है कि भारत को भरोसेमंद मध्यस्थ माना जा रहा है। भारत की ईरान के साथ ऐतिहासिक दोस्ती है और इजरायल के साथ भी मजबूत साझेदारी है। यही वजह है कि भारत दोनों पक्षों से बात कर सकता है।

भारत की वैश्विक वजनदारी अचानक नहीं बढ़ी है। इसके पीछे स्वतंत्र और दृढ़ विदेश नीति है। भारत ने किसी दबाव में अपना फैसला नहीं बदला। रूस से तेल खरीदना था तो खरीदा, अमेरिका से रणनीतिक साझेदारी करनी थी तो की। इसी से भारत सभी खेमों में स्वीकार्य बना है।

भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में है। डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया ने दिखाया है कि भारत केवल बाजार नहीं, समाधान देने वाला देश है। वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूती देने से भी भारत की भूमिका बढ़ी है।

ऐसे समय में जब दुनिया दो खेमों में बंटी दिख रही है, भारत दोनों पक्षों के साथ संवाद बनाए हुए है। पुतिन मोदी की बात सुनते हैं, जिनपिंग मोदी से हाथ मिलाते हैं और ईरान के राष्ट्रपति मोदी से शांति की अपील करते हैं। भारत अब केवल दर्शक नहीं, बल्कि सूत्रधार बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

आजकल

आस्था पर शॉर्टकट भारी

कैलास मानसरोवर के दो रास्ते-एक सरकारी भरोसा, दूसरा बाजार का जुआ

कैलास मानसरोवर केवल यात्रा नहीं है, यह करोड़ों हिंदुओं की आस्था है और इसी आस्था पर अब बाजार भारी पड़ रहा है। नेपाल-तिब्बत सीमा पर आई विनाशकारी बाढ़ ने यह सच्चाई सामने ला दी है। इस साल करीब 13,523 तीर्थयात्रियों ने यात्रा की है। बड़ी संख्या में यात्री भारत के अधिकृत मार्ग से नहीं, बल्कि नेपाल के निजी रास्ते से गए। इसी रास्ते पर कई भारतीय तीर्थयात्री लापता हुए हैं।

सवाल सीधा है- जब भारत सरकार लिपुलेख और नाथू ला जैसे पारंपरिक रास्ते दे रही है तो यात्री नेपाल के जोखिम भरे शॉर्टकट की ओर क्यों भाग रहे हैं?

सरकारी रास्ता कठिन, लेकिन भरोसेमंद है। विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित यात्रा में वैध पासपोर्ट, 18 से 70 वर्ष की आयु और शारीरिक फिटनेस अनिवार्य है। चयन कंप्यूटरीकृत ड्रॉ से होता है। मेडिकल जांच के बाद रूट और बैच का आवंटन सरकार करती है। सेना और आईटीबीपी की निगरानी होती है।

लेकिन प्रक्रिया लंबी है। ड्रॉ में नाम आने का इंतजार वर्षों तक खिंच सकता है। ओसीआई कार्डधारक और प्रवासी भारतीय इसमें शामिल नहीं हो पाते। यही कारण है कि कई लोग निजी रास्ते की ओर जाते हैं।

नेपाल वाला रास्ता आसान, लेकिन जोखिम भरा है। यह निजी टूर ऑपरेटरों के हाथ में है। बाढ़ ने दिखा दिया कि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल हैं।

निजी ऑपरेटरों ने कैलास को पर्यटन प्रोडक्ट बना दिया है और आस्था को पैकेज में बेच रहे हैं। सोशल मीडिया पर पांच दिन में कैलास दर्शन जैसे दावे लोगों को आकर्षित करते हैं और जल्दबाजी में जिंदगी दांव पर लग जाती है।

सरकार को लिपुलेख और नाथू ला पर बैच की संख्या बढ़ानी चाहिए तथा ड्रॉ की प्रक्रिया तेज करनी चाहिए। नेपाल रूट पर जाने वाले भारतीयों के लिए अनिवार्य पंजीकरण और बीमा लागू करना होगा। निजी ऑपरेटरों के लिए संयुक्त सुरक्षा प्रोटोकॉल जरूरी है।

कैलास जाना पुण्य है, लेकिन सुरक्षित वापस आना उससे बड़ा पुण्य है। आस्था पर शॉर्टकट लेना जिंदगी से खिलवाड़ है।

दो समंदरों की टूटी बातचीत और आपके भीतर का सूखा

जब प्रकृति आपस में बात करना बंद कर दे तो समझो इंसान ने हद पार कर दी है

सीमा नागर

एक पुरानी कहावत है कि जब घर के दो बुजुर्ग आपस में बात करना बंद कर दें तो घर बिखर जाता है। ठीक यही हाल आज दो महासागरों का है। प्रशांत महासागर, जो दुनिया का सबसे बड़ा बुजुर्ग है, और हिंद महासागर, जो भारत का पड़ोसी है, दोनों ने 70 साल से चली आ रही बातचीत बंद कर दी है। और जब समंदर चुप हो जाते हैं तो धरती पर तूफान बोलने लगते हैं।

वैज्ञानिकों ने इसे जलवायु संचार टूटना कहा है, लेकिन दर्शन कहता है कि यह प्रकृति का रूठना है। और जब प्रकृति रूठती है तो केवल मौसम नहीं बदलता, इंसान का मन भी सूखने लगता है। क्या है यह टूटा हुआ संवाद?

पिछले 70 साल से प्रशांत और हिंद महासागर के बीच एक अदृश्य डोर थी। वैज्ञानिक उसे वॉकर सर्कुलेशन कहते हैं। प्रशांत में हवा उठती थी, हिंद महासागर में बादल बनते थे। प्रशांत में अल नीनो आता था तो हिंद महासागर अपना तापमान बदलकर भारत को संकेत देता था कि इस बार मानसून कमजोर रहेगा। यह कोई किताबी फॉर्मूला नहीं था। यह प्रकृति का व्हाट्सएप था। दो समंदर आपस में चैट करते थे और उसी चैट से तय होता था कि भोपाल में कितनी बारिश होगी और विदिशा में गेहूं की फसल कैसी होगी।

अब यह चैट डिलीट हो रही है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 1950 के बाद हिंद महासागर 0.1 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक की दर से गर्म हुआ है, जबकि 1980 के दशक से प्रशांत महासागर का वॉकर सर्कुलेशन असामान्य रूप से मजबूत हो गया है। एक गर्म हो रहा है, दूसरा तेज भाग रहा है। दोनों के बीच की लय टूट गई है।

हमारे वेदों में लिखा है कि नदी और समंदर केवल पानी नहीं हैं, वे जीव हैं, उनमें प्राण हैं। जब हम समंदर को कचरा डालने की जगह समझते हैं, जब हम हवा में जहर घोलते हैं तो समंदर का प्राण घटता है और प्राण घटने पर संवाद टूटता है।

आज हमने प्रकृति को संसाधन समझ लिया है, उपयोग की वस्तु समझ लिया है। हमने सोचा कि

समंदर में तेल डाल दो तो कुछ नहीं होगा, फैक्ट्री का धुआं आसमान में उड़ा दो तो हवा साफ रहेगी। लेकिन समंदर सब याद रखता है। वह याद रखता है कि आपने कितना कार्बन जलाया है और उसी हिसाब से वह अपना तापमान बढ़ाता है।

तथ्य जो आपको हिला देंगे। वैज्ञानिकों ने कोरल, पेड़ों के तने और गुफाओं में लटके स्टेलेग्माइट से पिछले 500 साल का इतिहास निकाला है। उस इतिहास में 1950 से 1980 तक दोनों महासागरों के बीच सबसे मजबूत रिश्ता था। 1980 के बाद से रिश्ता कमजोर होने लगा और 2019 के बाद से यह लगभग टूट चुका है।

हिंद महासागर दुनिया में सबसे तेजी से गर्म होने वाला महासागर बन गया है। यदि यही रफ्तार रही तो 2050 तक हिंद महासागर का तापमान इतना बढ़ जाएगा कि मानसून का पैटर्न पूरी तरह बदल जाएगा। भारत में 60 प्रतिशत खेती आज भी मानसून पर निर्भर है। यदि मानसून बिगड़ा तो किसान बिगड़ेगा और किसान बिगड़ा तो देश बिगड़ेगा।

आपके भीतर का मानसून भी बिगड़ रहा है। यह केवल बाहर के समंदर की कहानी नहीं है, यह आपके भीतर की भी कहानी है। जब बाहर का समंदर गर्म होता है तो आपके भीतर का मन भी गर्म होता है। बेचैनी बढ़ती है, नींद कम होती है, गुस्सा बढ़ता है। यह कोई कविता नहीं है, यह विज्ञान है। जब तापमान बढ़ता है तो हमारे शरीर में तनाव के हार्मोन बढ़ते हैं।

प्रकृति से कटना ही सबसे बड़ा रोग है। हमने एसी में रहना सीख लिया है, लेकिन पेड़ के नीचे बैठना भूल गए हैं। हमने बोतल का पानी पीना सीख लिया है, लेकिन नदी में हाथ डालना भूल गए हैं।

प्रकृति से खिलवाड़ कैसे रोकें? अपनी सोच बदलें। समंदर को कचरा घर मत समझें, नदी को नाला मत समझें। हर नदी, हर तालाब, हर समंदर में जीवन है। कार्बन कम करें, गाड़ी कम चलाएं, बिजली बचाएं। एक पेड़ लगाएं और उसे अपने बच्चे जैसा पालें। एक पेड़ एक साल में 20 किलो कार्बन सोखता है और वही कार्बन समंदर को गर्म करता है।

स्थानीय को बचाएं। भोपाल का बड़ा तालाब हो या इंदौर की कान्ह नदी, उसे साफ रखें, क्योंकि हर छोटा जल स्रोत अंत में समंदर से ही मिलता है।

बच्चों को सिखाएं। स्कूल में ई-कचरा, प्लास्टिक और पानी की कहानी बताएं, ताकि अगली पीढ़ी समंदर से बात करना फिर सीख सके।

सरकार और समाज की जिम्मेदारी भी है। ई-कचरा प्रबंधन नियम 2022 बन चुका है, लेकिन केवल नियम बनाने से कुछ नहीं होता, उसे लागू करना होगा। हर शहर में वैज्ञानिक तरीके से ई-कचरा निस्तारण केंद्र बने। उत्पादक कंपनियां अपनी जिम्मेदारी लें और अपना बेचा हुआ मोबाइल वापस लें।

किसानों के लिए नए मानसून मॉडल बने, जो केवल प्रशांत पर निर्भर न हों, बल्कि हिंद महासागर के तापमान को भी पढ़ें।

अंतिम अपील-समंदर की चिट्ठी पढ़िए। समंदर ने एक चिट्ठी लिखी है और उस चिट्ठी में लिखा है कि आशा है, आप तेज रफ्तार जिंदगी और आधुनिकता के बीच सुरक्षित हैं। लेकिन हम दो भाई अब आपस में बात नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि आपने हमारे बीच में धुआं भर दिया है।

यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे मानसून देखें, खेत में धान लहराते देखें और सर्दी में कोहरा महसूस करें तो आज ही रुक जाइए। प्रकृति से खिलवाड़ बंद कीजिए। उसे पूजिए नहीं तो कम से कम उसे छेड़िए मत। नहीं तो जब दो समंदर बात करना बंद कर देते हैं तो एक दिन आपके घर का नल भी बात करना बंद कर देगा और तब आपको समझ आएगा कि पानी केवल नल में नहीं आता, वह समंदर की बातचीत से आता है।

नो बीमा, नो फ्यूल : भोपाल, इंदौर, उज्जैन से शुरू होगी सड़क पर मौत रोकने की नई जंग

सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी की बड़ी अनुशंसा - अब बिना बीमा पेट्रोल नहीं

भोपाल में अब सड़क पर दौड़ने से पहले सोचना होगा, क्योंकि बिना बीमा के गाड़ी चलाना अब केवल चालान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पेट्रोल पंप पर ही गाड़ी रोक दी जाएगी। सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी ने मध्य प्रदेश सरकार को सख्त निर्देश दिए हैं कि बिना बीमा वाले वाहनों को किसी भी हालत में ईंधन न दिया जाए। इस योजना को सबसे पहले भोपाल, इंदौर और उज्जैन में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर लागू किया जाएगा।

नो बीमा, नो फ्यूल योजना सरकार आने वाले दिनों में लागू करने जा रही है। इसके तहत सभी पेट्रोल पंपों पर आधुनिक कैमरे लगाए जाएंगे। ये कैमरे हर वाहन की नंबर प्लेट को स्कैन करेंगे और तुरंत बीमा डेटाबेस से मिलान करेंगे। यदि वाहन का बीमा नहीं होगा तो पंप संचालक को अलर्ट भेजा जाएगा और उसे पेट्रोल-डीजल देने से मना करने के लिए कहा जाएगा। यह व्यवस्था पायलट प्रोजेक्ट के तहत चुनिंदा जिलों में लागू होगी। इसके लिए ऐसे जिलों को चुना जा रहा है, जहां सबसे ज्यादा बिना बीमा वाले वाहन दौड़ रहे हैं। परिवहन विभाग के पास पहले से ही ऐसे वाहनों की सूची है और अब उन्हें कैमरे के जरिए पकड़ा जाएगा।

सरकार का दावा है कि 800 मौतें कम हुई हैं। परिवहन सचिव मनीष सिंह ने सुप्रीम कोर्ट कमेटी के सामने प्रजेंटेशन में बताया कि मध्य प्रदेश में सड़क हादसों में होने वाली मौतों को रोकने के लिए कई स्तर पर काम जारी है। 2025 के पहले छह माह की तुलना में 2026 के पहले छह माह में हुए हादसों में करीब 800 कम मौतें हुई हैं। यह आंकड़ा बताता है कि सख्ती और जागरूकता से असर हो रहा है। हर साल औसतन 13 हजार मौतें हो रही हैं। इन्हें रोकने के लिए सरकार कई काम कर रही है। ओवरस्पीडिंग, गलत दिशा में वाहन चलाना और बिना हेलमेट के गाड़ी चलाना सबसे बड़े कारण हैं और इन्हीं पर सबसे ज्यादा फोकस किया जा रहा है।

कमेटी को एक और चौंकाने वाला तथ्य मिला कि घायलों को अस्पताल पहुंचाने में 16 मिनट या अधिक समय लग रहा है। इस पर कमेटी ने कड़ी आपत्ति जताई है। कहा गया कि ऐसा इंतजाम हो कि कम से कम समय में घायल को अस्पताल पहुंचाया जाए और तुरंत इलाज शुरू हो।

सड़क हादसों में सबसे ज्यादा मौतें खून बहने और समय पर इलाज न मिलने से होती हैं। यदि घायल को गोल्डन आवर में अस्पताल पहुंचा दिया जाए तो 50 प्रतिशत जानें बचाई जा सकती हैं। इसके लिए हाईवे पर एंबुलेंस की संख्या बढ़ाने और ट्रॉमा सेंटर को मजबूत करने के निर्देश दिए गए हैं।

सड़क हादसों में कमी लाने के लिए भोपाल, इंदौर और उज्जैन में भी जीरो फेटेलिटी डिस्ट्रिक्ट यानी जेडएफडी प्रोग्राम चलाया जाएगा। इस प्रोग्राम के तहत एक जिले को जीरो मौत वाला जिला बनाने का लक्ष्य रखा जाता है। सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी की मंत्रालय में हुई बैठक में यह बात सामने आई। शीर्ष कोर्ट के पूर्व जस्टिस अभय मनोहर सप्रे ने इसकी अध्यक्षता की। यहां राज्य सरकार की ओर से सड़क सुरक्षा पर प्रजेंटेशन दिया गया।

जेडएफडी प्रोग्राम में ब्लैक स्पॉट चिन्हित किए जाएंगे, जहां सबसे ज्यादा हादसे होते हैं। उन जगहों पर सड़क इंजीनियरिंग सुधारी जाएगी। स्पीड ब्रेकर, साइन बोर्ड और लाइटिंग लगाई जाएगी। साथ ही लोगों को जागरूक करने के लिए स्कूल-कॉलेजों में अभियान चलाया जाएगा।

भोपाल के ऑटोमेटिक फिटनेस सेंटर का निरीक्षण भी किया गया। एक वाहन को फिटनेस देने की प्रक्रिया देखी गई। टेक्नीशियन से पूछा गया तो जवाब संतोषजनक नहीं मिला। पता चला कि कई अनफिट वाहन भी पास किए जा रहे हैं। इस पर अध्यक्ष ने नाराजगी जताई और कहा कि फिटनेस सेंटर में पारदर्शिता जरूरी है। भोपाल में कई ऐसे वाहन दौड़ रहे हैं, जिनकी फिटनेस खत्म हो चुकी है, लेकिन जुगाड़ से फिटनेस सर्टिफिकेट ले लेते हैं। यही वाहन सबसे ज्यादा हादसों का कारण बनते हैं। अब ऑटोमेटिक सेंटर में हर प्रक्रिया कैमरे में रिकॉर्ड होगी और डेटा सीधे परिवहन विभाग के सर्वर पर जाएगा।

बिना बीमा वाले वाहन केवल कानून का उल्लंघन नहीं हैं, बल्कि पीड़ित के लिए भी बड़ा खतरा हैं। यदि बिना बीमा वाला वाहन किसी को टक्कर मार देता है तो घायल को बीमा से मिलने वाली मदद नहीं मिलती है। तीसरे पक्ष का बीमा अनिवार्य है, ताकि हादसे के बाद पीड़ित परिवार को मुआवजा मिल सके। मध्य प्रदेश में आज भी 30 प्रतिशत से ज्यादा वाहन बिना बीमा के दौड़ रहे हैं। दोपहिया वाहनों में यह संख्या और भी ज्यादा है। लोग पहले साल बीमा कराते हैं, फिर रिन्यू नहीं कराते हैं। इसी लापरवाही को रोकने के लिए पेट्रोल पंप पर ही रोक लगाने की योजना बनाई गई है।

पेट्रोल पंप पर लगा कैमरा नंबर प्लेट पढ़ेगा और वाहन डेटाबेस से बीमा की वैधता चेक करेगा। यदि बीमा फेल होगा तो पंप पर लगी स्क्रीन पर लाल सिग्नल आएगा और संचालक को पेट्रोल देने से मना करना होगा। यदि संचालक फिर भी पेट्रोल देता है तो उस पर भी जुर्माना लगेगा।

शुरुआत में लोगों को जागरूक किया जाएगा। एसएमएस भेजा जाएगा कि आपका बीमा खत्म हो गया है, उसे रिन्यू करा लें। इसके बाद सख्ती की जाएगी। इस योजना की सबसे बड़ी चुनौती पेट्रोल पंप संचालकों का सहयोग है। कई जगह पंप संचालक विवाद से बचने के लिए बीमा न होने पर भी फ्यूल दे देते हैं। इसके लिए उन्हें कानूनी सुरक्षा देनी होगी और पुलिस का सहयोग भी जरूरी होगा।

नेटवर्क और डेटा भी चुनौती हैं। ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट की स्पीड कम है, वहां कैमरा सिस्टम ठीक से काम नहीं करेगा। इसके लिए ऑफलाइन सिस्टम भी विकसित किया जा रहा है।

सड़क पर अनुशासन ही जान बचाएगा। 800 मौतें कम होना एक अच्छी शुरुआत है, लेकिन 13 हजार मौतों का आंकड़ा अभी भी डराता है। नो बीमा, नो फ्यूल योजना केवल एक सख्ती नहीं है, बल्कि यह संदेश है कि सड़क पर अनुशासन जरूरी है।

भोपाल, इंदौर और उज्जैन में पायलट प्रोजेक्ट सफल रहा तो इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जाएगा। फिर वह दिन दूर नहीं, जब बिना हेलमेट, बिना बीमा और बिना फिटनेस के वाहन सड़क पर दिखेंगे ही नहीं।

सड़क सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, यह हर नागरिक की जिम्मेदारी है, क्योंकि सड़क पर एक लापरवाही पूरे परिवार की जिंदगी छीन सकती है।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

विदेश जाने का सपना थमा, अब भारत पहली पसंद...

50 प्रतिशत छात्रों ने कहा - पहले भारत में डिग्री, फिर विदेश में करियर; बदल गया पढ़ाई का वैश्विक रुझान

वो दौर गया, जब बारहवीं के बाद सीधे अमेरिका, ब्रिटेन या कनाडा का बोर्डिंग पास ही सफलता का पैमाना माना जाता था। अब भारतीय छात्रों ने विदेश जाने की जल्दबाजी पर ब्रेक लगा दिया है। कैम्ब्रिज इंटरनेशनल एजुकेशन के ताजा सर्वे 2025-26 ने यह बड़ी तस्वीर साफ कर दी है। रिपोर्ट कहती है कि अब 50 प्रतिशत से ज्यादा भारतीय छात्र पहले भारत में ही पढ़ना चाहते हैं।

साल 2024 में यह आंकड़ा 47 प्रतिशत था, जबकि विदेश जाने की चाहत 42 प्रतिशत से घटकर 40 प्रतिशत पर आ गई है। मतलब - ग्रेजुएशन भारत में, मास्टर्स बाहर। यही नया मंत्र है।

49 देशों के 24,637 छात्रों से पूछा गया सवाल। यह सर्वे कोई छोटा सैंपल नहीं है। इसमें 49 देशों के 404 संस्थानों के 24,637 छात्र शामिल थे, जिसमें अकेले भारत के 112 संस्थान थे। नतीजा साफ है - दुनिया के सबसे पसंदीदा देश अब उतने पसंदीदा नहीं रहे।

पहले जो छात्र आंख बंद करके अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा भागते थे, अब वही हिसाब लगा रहे हैं। अमेरिका में एच-1बी की अनिश्चितता, ब्रिटेन में पोस्ट-स्टडी वर्क वीजा पर संशय और कनाडा में पीआर नियमों का सख्त होना - खर्चा डबल, नौकरी हाफ। अमेरिका में एक साल का 50 लाख रुपये का खर्च, ऊपर से आवास संकट और पार्ट टाइम जॉब की कमी ने बजट बिगाड़ दिया। नस्लीय घटनाओं और अकेलेपन ने भी पैरेंट्स को डरा दिया है। अब छात्र सिर्फ डिग्री नहीं, बल्कि पढ़ाई के बाद की नौकरी, करियर की लंबी सुरक्षा और मिलने वाले अवसरों को भी एक साथ तौल रहे हैं।

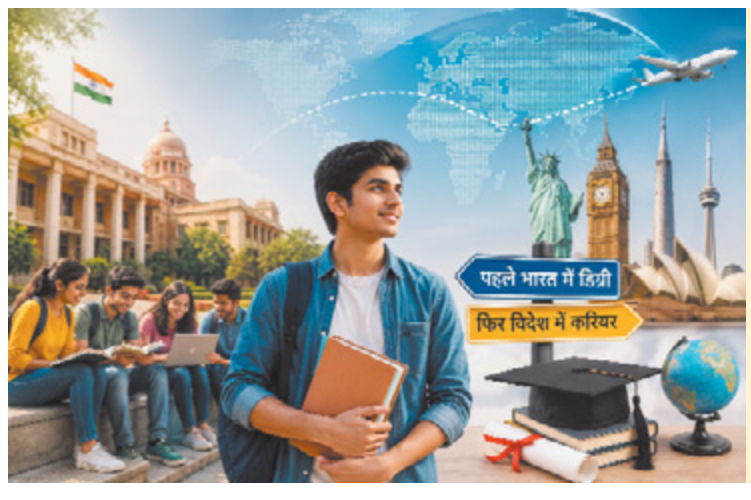

पहले जो छात्र आंख बंद करके अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा भागते थे, अब वही हिसाब लगा रहे हैं। अमेरिका में एच-1बी की अनिश्चितता, ब्रिटेन में पोस्ट-स्टडी वर्क वीजा पर संशय और कनाडा में पीआर नियमों का सख्त होना - खर्चा डबल, नौकरी हाफ।

रिपोर्ट की सबसे दिलचस्प लाइन यही है - भारत अब अपना सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी बन गया है। नई शिक्षा नीति, विदेशी यूनिवर्सिटी के इंडिया कैंपस, डीकिन, वोलोंगोंग जैसी यूनिवर्सिटी का भारत आना, चार साल की डिग्री और स्किल बेस्ड पढ़ाई ने गेम पलट दिया है। अब छात्र को लगता है कि 40 लाख रुपये खर्च करके बाहर वही डिग्री लेने से बेहतर है कि 8-10 लाख रुपये में भारत में ही ग्लोबल लेवल की पढ़ाई कर ली जाए।

इंडिया में ग्रेजुएशन, विदेश में मास्टर्स। एक्सपर्ट इसे ब्रेन ड्रेन से ब्रेन गेन की ओर वापसी बता रहे हैं। अब ट्रेंड है - स्कूल के बाद भारत में मजबूत बेस, फिर मास्टर्स के लिए विदेश।

इससे पैसा भी बचता है, परिवार भी पास रहता है और भारतीय संस्थानों की गुणवत्ता का भी फायदा मिलता है। कोरोना के बाद यह सोच और पक्की हुई है कि ऑनलाइन ही जब विदेशी प्रोफेसर से पढ़ सकते हैं तो शुरुआत में ही इतना बड़ा खर्च क्यों करना?

विदेश जाना अब सपना नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति बन गया है और उस रणनीति में पहला पड़ाव अब भारत ही है।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)